कुछ तो है

श्रृंखला: कुछ इधर की कुछ उधर की

- के. सी. जैन

अनुक्रमणिका

1. प्रारंभ एक रहस्यमयी यात्रा का..02

2. साक्षात दिव्य आत्मा का..03

3. बढ़ते चरण दिव्यात्मा से संवाद के...05

4. प्रारंभ चुनौतियों का..07

5. बढ़ती चिताएं..09

6. झलक अतींद्रिय ज्ञान की...10

7. सहयोग स्वजनों का..12

8. सहयोग मिलना श्री केएल जैन का...14

9. प्रश्नोतरी अज्ञात की..16

10. कुछ शंकायें, कुछ समाधान...18

11. दर्शन गुरुदेव के..20

12. जब चाहेंगे नहीं तो पाएंगे कैसे..22

13. क्या उस दिवंगत आत्मा से संपर्क हुआ था.......................23

14. क्या मौत सामने खड़ी थी ?...25

15. अंतिम प्रहार..27

16. लड़ाई आर-पार की...29

17. यात्रा अनंत की...30

प्राक्कथन

योग और ध्यान का विषय जहां एक और मानसिक शांति, स्वास्थ्य और व्यक्तित्व विकास के साथ जुड़ा है, वहीं दूसरी ओर यह रहस्यों से भी भरा है । मैं आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा स्थापित और निर्देशित अध्यात्म साधना केंद्र के साथ गत लगभग तीन दशक से जुड़ा हूं ।

आचार्य महाप्रज्ञ न केवल जैन साधना पद्धति के आधुनिक स्वरूप में प्रेक्षा ध्यान के प्रणेता है, उन्होंने अपने प्रवचनों और साहित्य में इसके विज्ञान और रहस्य को स्पष्ट करने का भी प्रयास किया है। परंतु, फिर भी जब तक कोई स्वयं अनुभव से न गुजरे, उन संकेतों को पकड़ पाना आसान नहीं होता ।

अध्यात्म साधना केंद्र प्रेक्षा ध्यान साधना की प्रयोगशाला है और अक्सर अनेक साधकों को ऐसे विचित्र अनुभवों से साक्षात्कार होने का अवसर आता है जिनका कोई स्पष्ट वैज्ञानिक आधार समझ नहीं आता । परंतु जो घटित हो रहा होता है उसे अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता ।

एक ऐसा ही अनुभव जो अप्रत्याशित और नया तो था ही, कहीं-कहीं बहुत सी स्थापित मान्यताओं के प्रतिकूल भी । मैंने उसे जिस रूप में देखा और समझा, अपने शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास किया है । यह निर्णय मैं सुधी पाठकों पर छोड़ता हूं कि वे इसे किस रूप में स्वीकार करते हैं ।

- के.सी. जैन

कुछ तो है – भाग -1
प्रारंभ एक रहस्यमयी यात्रा का

अनामिका अध्यात्म साधना केंद्र की एक कुशल प्रशिक्षिका है और उसके स्वर में एक माधुर्य है । वह रुचिपूर्वक ध्यान का प्रयोग करती और करवाती है । 31 मार्च, 2019 को अणुव्रत भवन में मैंने साध्वी कुंदन रेखा जी के दर्शन किए और ध्यान के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ पर चर्चा हुई । यह देखते हुए कि उनके लिए अध्यात्म साधना केंद्र पधारना संभव नहीं था और वे अणुव्रत भवन में सात-आठ दिन ही विराजने वाली थीं, मैंने अनामिका को उन्हें ध्यान का प्रयोग करवाने के लिए नियोजित करने का निवेदन किया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया । दूसरे दिन से अनामिका ने अणुव्रत भवन जाकर साध्वी श्री के साथ अर्हम और नवकार पर ध्यान करना प्रारंभ किया । साध्वी श्री ने भी मनोयोग से प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया ।

साध्वीश्री के अर्हम् के लयबद्ध और शुद्ध उच्चारण में एक अपनी विशिष्टता थी । अनामिका प्रशिक्षिका तो थी परंतु उसे ध्यान की गहराई में जाने का अनुभव नहीं था । साध्वी श्री के साथ प्रयोग करते हुए दूसरे दिन ही उसे चैतन्य केंद्रों पर प्रकंपन अनुभव होने लगे और दो-तीन दिनों में तो उसे लगा कि जैसे सारे ही चैतन्य केंद्र प्रक्रम्पित हो उठे हैं । उसे असीम ऊर्जा और शांति का अनुभव होने लगा । उसे लगने लगा कि जैसे वह किसी दूसरी ही दुनिया में पहुंच रही थी ।

आठ दिन बीतते-बीतते तो साध्वी श्री ने णमो सिद्धाणं के साथ अरुण रंग का जो ध्यान किया तो उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा कि मानो उनके शरीर में जो खुजली थी, अथवा अन्य समस्याएं थीं, उस रोग के परमाणु उस रंग में जल रहे हैं, झड़ रहे हैं और वे स्वस्थ हो रही हैं । सहवर्ती साध्वियों के अनुभव भी कुछ ऐसे ही थे ।

मैंने अनामिका से कहा कि अब उसे इन प्रयोगों को जारी रखना है और अनुभव की गहराई में जाने का प्रयास करना है ।

कुछ तो है – भाग -2
साक्षात दिव्य आत्मा का

अनामिका की साधना अब बराबर चल रही थी और वह नियमित ध्यान कर रही थी । ध्यान का एक व्यवस्थित क्रम हो गया था और वह प्रभावी प्रशिक्षिका के रूप में सामने आ रही थी । केंद्र में आने वाले साधक उसी से ही प्रशिक्षण लेने में रुचि रखते थे ।
बीच-बीच में कुछ ऐसे क्षण भी आए जब अनामिका ने घटनाओं का पूर्वाभास देना अथवा ध्यान की गहराई में जाकर अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर देना भी प्रारंभ कर दिया । न तो ऐसा करने की उसे प्रेरणा दी गई थी और न ही उसकी कोई ऐसी इच्छा । यह तो स्वत: ही हो रहा था ।

ऐसा करते-करते संभवत: लगभग जुलाई मास में अनामिका को अचानक ऐसा आभास होने लगा कि उसे किसी दिव्यात्मा का साक्षात्कार हो रहा है, जिसकी उसने मुझसे चर्चा की । उसके अनुसार वह दिव्य आत्मा बहुत विशाल थी और अत्यंत तेजोमय भी । *योगक्षेम भवन* के मंत्र साधना कक्ष में जहां अनामिका ध्यान करती थी, उसके अनुसार, वह सामने मंच पर केवल उस दिव्य आत्मा के चरणों को ही देख पाती थी । उस तेज के सामने आंखें उठाकर देखना संभव नहीं था, यद्यपि वह साक्षात्कार बहुत ही दिव्य, आहलादकारी और अनुपम था ।
अनामिका का दिव्य आत्मा से वार्तालाप भी शुरू हो गया था । अनामिका लगभग दो-दो घंटे ध्यान में बैठी रहती और कई बार तो उसके प्रसन्नता के आंसू बहने लगते । दिनांक 12 जुलाई को दिव्य आत्मा ने उसे संकेत दिया था कि उसे 101 दिन लगातार ध्यान करना है । मैंने उससे उस दिव्य आत्मा का परिचय प्राप्त करने को कहा ।

ऐसा लगभग रोज ही हो रहा था और जिस दिन दिव्यात्मा के दर्शन नहीं हो पाते अनामिका उदास हो जाती । प्रश्न पूछने पर दिव्यात्मा ने अपना नाम भी बताया ।

अनामिका न तो जैन परंपरा से है और न ही उसे इस परंपरा का कोई ज्ञान है । जो नाम उसे बताया गया वह भी उसके लिए अपरिचित था । जैन परंपरा के अनुसार यदि वह नाम सही था तो वे सिद्ध भगवान हो चुके हैं और सिद्धात्माओं का दर्शन संभव नहीं है । अतः अनामिका की बात पर विश्वास करना संभव नहीं हो पा रहा था ।

मैंने उससे अगले दिन पुन: दिव्यात्मा से परिचय प्राप्त करने और यह सुनिश्चित करने को कहा कि वे जैन परंपरा की मान्यता वाली दिव्य आत्मा ही हैं । अनामिका ने यही प्रश्न किया और उत्तर मिला कि वे वही हैं । कुछ गूढ रूप में उन्होंने कहा कि अपेक्षा होने पर वे दर्शन भी दे सकती हैं जोकि बहुत स्पष्ट नहीं हुआ । और आगे यह भी कहा कि अनामिका पूर्व जन्म में एक जैन श्राविका थी और उसका नाम भी यही था ।
पूरी प्रक्रिया जहां आश्चर्यचकित कर रही थी वहीं रहस्यमयी भी थी । किसी अनजाने पथ की ओर यह हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही थी ।

ऐसा स्पष्ट हो रहा था कि बहुत कुछ सामने आना बाकी है ।

कुछ तो है – भाग -3
बढ़ते चरण दिव्यात्मा से संवाद के

अनामिका को दिव्यात्मा से अब यह संकेत मिला कि उसे सुबह 3:30 बजे ध्यान करना चाहिए और मैंने भी अनामिका को सुझाव दिया कि उसे सुबह और शाम दोनों के ध्यान में एक निश्चित नियमितता रखनी चाहिए, समय की भी और स्थान की भी । अनामिका की रुचि और बढ़ती जा रही थी उसने भोजन भी संयमित करना प्रारंभ कर दिया था । अब वह सुबह 3:30 बजे उठकर लगभग 1:30 से 2 घंटे का ध्यान करती और इसी प्रकार शाम को भी लगभग 7:30 बजे डेढ़ से 2 घंटे का ध्यान करती ।

मैंने उसकी सहवर्ती शिक्षिकाओं एवं प्रशिक्षकों को यह निवेदन किया था कि उसके ध्यान करते समय दो या तीन साधक उसके साथ निश्चित रूप से उपस्थित रहें । कई बार अनामिका का ध्यान दीर्घ हो जाता था और उसे ध्यान से बाहर लाने के लिए हमें नवकार मंत्र का अथवा लोगस्स(एक जैन स्तोत्र) का बार-बार उच्चारण करना पड़ता । उससे वह कुछ देर के बाद ध्यान से बाहर आ जाती । कभी-कभी वह अपने आसन पर ही एक और लुढ़क भी जाती और उसे उसका भान भी नहीं हो पाता ।

संध्या काल में मैं भी कभी-कभी उपस्थित रहता । उसके चेहरे के भावों को देखकर मुझे समझ में आ जाता कि अब दिव्यात्मा उसके समक्ष है और वह उसका साक्षात्कार कर रही है ।
एक बार तो ऐसा भी हुआ कि जिस कक्ष के मध्य में बैठकर वह ध्यान कर रही थी तो उसके और मंच के बीच में से एक साधक गुजरा और ध्यान के बिल्कुल बीच से ही अनामिका ने एकदम उससे हटने के लिए कहा, क्योंकि ऐसा लगा जैसे वह साधक उसके और दिव्यात्मा के बीच में साक्षात्कार में अवरोध पैदा कर रहा था ।

एक दिन तो अनामिका ध्यान संपन्न करते ही उठकर, जहां दिव्यात्मा उसे दिखाई दे रही थी, उस स्थान की एक कपड़ा लेकर सफाई करने लगी थी, क्योंकि उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह स्थान पर्याप्त साफ नहीं था । पूरी प्रक्रिया बहुत ही आश्चर्यचकित करने वाली और अविश्वसनीय थी । न मुझे और न ही मेरे साथियों को ऐसी किसी घटना के साक्षात्कार का अथवा ऐसी परिस्थिति में किस प्रकार का व्यवहार किया जाना चाहिए उसका अनुभव था ।

परंतु, मेरा यह मानना जरूर था की अध्यात्म साधना केंद्र अध्यात्म की साधना की भूमि थी और इसमें ध्यान की गहराइयों में जाने का और संबंधित अनुभव के प्रयोग करने का एक क्रम जरूर होना चाहिए । तभी इससे संबंधित अनसुलझे प्रश्नों का कोई समाधान मिल सकता है और विकास की नई दिशाएं खुल सकती हैं ।

अनामिका जिस दौर से गुजर रही थी वह प्रसन्न करने वाला था यद्यपि इससे उसके कुछ साथियों को कठिनाई हो रही थी, जिनको सुबह-शाम उसके साथ एक तरह से अकारण ही समय गुजारना पड़ता था, और जिनको लगता था कि संभवतः वह मुझे प्रसन्न करने के लिए नाटक कर रही थी और उसके अनुभवों में सत्यता नहीं थी ।

अनामिका ने साथियों के व्यवहार को देखते हुए और व्यक्तिगत स्तर पर उपहास का पात्र बनने के कारण मुझे यह कहना भी प्रारंभ कर दिया था जी उसे अकेले ही ध्यान की अनुमति मिल जाए जिससे उसके साथियों को कष्ट ना हो और वह उपहास का पात्र ही ना बने ।

यह तो संभवतः बहुत ही साधारण चुनौती थी । अभी तो बहुत कुछ देखना बाकी था ।

कुछ तो है – भाग -4
प्रारंभ चुनौतियों का

अनामिका को ध्यान करते और दिव्य आत्मा से साक्षात्कार करते कोई 10-12 दिन ही गुजरे होंगे कि उसे अचानक ऐसे लगने लगा जैसे काले वस्त्रों में डरावनी शक्तियां, जो मानव वेश में थीं, परंतु पहचानी नहीं जा रही थीं, आकर उसे डरा रही थीं ।

वे उसके चारों ओर एकत्रित हो जातीं, जोर-जोर से शोर मचातीं और उसे बार-बार ध्यान रोक देने के लिए दबाव डालती । धमकी देतीं कि यदि उसने ध्यान करना बंद नहीं किया तो वे उसे मार देंगी । वे उसे केवल डराती ही नहीं थीं, शारीरिक कष्ट भी देती थीं और अनामिका को शरीर में पीड़ा होने लगती । अनामिका को रात में सोने में भी बहुत कठिनाई होने लगी थी क्योंकि वह जैसे ही आंखें बंद करती, उसे वही आकृतियां फिर दिखाई देती, वही आवाजें भी सुनाई देती और वह बुरी तरह डर जाती ।

अनामिका दृढ़ संकल्पित थी कि वह अपनी साधना को नहीं रोकेगी और उसे जो दिव्य आत्मा से 101 दिन साधना करने का संकेत मिला था उसे किसी भी तरह बीच में नहीं छोड़ेगी । दूसरी ओर ऐसा लग रहा था कि उपद्रवी शक्तियां उसे अपनी साधना में सफल नहीं होने देंगी ।

इन उपद्रवी शक्तियों को अनामिका की साधना से क्या कठिनाई थी यह समझ में नहीं आ रहा था । अब अनामिका की साधना के समय विशेष तौर से शाम को मैंने स्वयं उपस्थित रहने का निश्चय कर लिया यद्यपि उससे मेरी पूरी दिनचर्या ही बदल जाने वाली थी । पहले सुबह 10:00 बजे अध्यात्म साधना केंद्र जाना, फिर 4:00 बजे वापस आना, 7:00 बजे फिर केंद्र जाना और रात को लगभग 11:00 बजे तक घर पहुंचना ।

ध्यान से बाहर आने के बाद अनामिका लगभग डेढ़ से 2 घंटे कोई भी बात करने की स्थिति में नहीं होती थी और उस दिन का उसका अनुभव जानने के लिए मुझे रात्रि को देर तक इंतजार करना पड़ता । कभी-कभी तो रात को 12:00 भी बज जाते । ऊपर से यह चुनौती, जिसका किसी के पास कोई समाधान नहीं था ।

मैंने 1-2 व्यक्तियों से संपर्क करने का प्रयास किया जो प्रेत आत्माओं आदि को भगाने का काम करते थे, परंतु मेरा किसी में विश्वास जमा नहीं । तब मैंने यह निश्चय किया कि मुझे मुनि जय कुमार जी, जिनका ध्यान की गहराई में जाने का बहुत ही विशिष्ट अनुभव है, उनसे संपर्क करना चाहिए । उन्होंने सुझाव दिया कि ध्यान प्रारंभ करने से पूर्व एक कवच का निर्माण कर लेना चाहिए और इस हेतु उन्होंने चारों दिशाओं में ध्यान करते हुए 27-27 बार लोगस्स (जैन परंपरा के 24 तीर्थंकरों की स्तुति), यानी पूरी 108 आवृत्ति की माला फेरने का सुझाव दिया और उसके बाद ध्यान प्रारंभ करने को कहा ।

कुछ तो है – भाग -5

बढ़ती चिताएं

अब अनामिका ने सुबह और शाम ध्यान करने से पूर्व लोगस्स (जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की स्तुति का स्त्रोत) का कवच बनाना प्रारंभ कर दिया था और इस प्रकार उसका समय भी अधिक लगने लग गया था । इस प्रयोग को करने से उसका कष्ट थोड़ा कम हुआ और ऐसा लगने लगा कि संभवतः अब उपद्रवी शक्तियां उसे और परेशान नहीं करेंगी ।

परंतु यह प्रयोग संभवतः पर्याप्त नहीं था और कुछ ही दिनों में अनामिका का कष्ट पूर्ववत सामने आने लगा था । एक तरफ तो अनामिका संकल्प पूर्वक कवच का निर्माण करती, ध्यान का प्रयोग करती और दूसरी तरफ उपद्रवी शक्तियां बीच-बीच में आकर उसे बुरी तरह से डरातीं और शारीरिक पीड़ा भी देतीं ।
काले वस्त्र पहने हुए वे उसे चारों ओर से घेर लेतीं, अट्टहास करतीं, आवाजें निकालती और अपनी साधना बंद करने के लिए कहतीं । दूसरी तरफ अनामिका को दैवी शक्तियों का साक्षात्कार भी हो रहा था । उसे ऐसा लगता कि सफेद वस्त्र पहने वे दैवी शक्तियां नवकार मंत्र का जप करते हुए उसके चारों ओर बैठी हैं और बार-बार उसका साहस बढ़ा रही हैं कि उसे इस साधना के क्रम को छोड़ना नहीं है, आगे बढ़ते रहना है । जब कभी वह दिव्य आत्मा से इस बारे में प्रश्न करती तो वहां से भी उसे इसी प्रकार का संकेत मिलता ।

अनामिका के साथ बैठे-बैठे अब मुझे स्पष्ट रूप से ज्ञात होने लग गया था कि कब वह उपद्रवी शक्तियों का सामना कर रही थी और कब दैवी शक्तियां अथवा दिव्य आत्मा उसके सामने थी, क्योंकि उसके अनुरूप ही उसकी पूरी भाव- भंगिमा बदल जाती थी और अनुमान लगाना बहुत ही सहज हो जाता था । कहना न होगा कि मुझे अथवा अन्य साधक जो वहां उपस्थित होते, उन्हें न तो ऐसा कुछ दिखाई देता, न सुनाई देता और न ही कुछ भी प्रतीत होता था ।

मेरे सामने एक भयंकर समस्या थी कि अभी यात्रा बहुत बाकी थी, और मार्ग कोई सूझ नहीं रहा था । कहीं कोई अनहोनी घट जाए तो क्या हो, ऐसा भय सताता रहता था ।

ऐसे में मुझे एक मार्ग सूझा ।

कुछ तो है – भाग -6
झलक अतींद्रिय ज्ञान की

इधर अनामिका का दैवी और उपद्रवी शक्तियों से साक्षात्कार का क्रम चल रहा था और उधर कभी-कभी ऐसा संकेत मिलने लगा था कि संभवतः वह अज्ञात से संपर्क कर सकती थी अथवा उसकी जानकारी दे सकती थी । ऐसा ही एक प्रसंग अचानक ही अध्यात्म साधना केंद्र में उपस्थित हो गया था ।

जैन परंपरा की एक समणी (संन्यास की प्रारंभिक अवस्था) अचानक ही बिना किसी सूचना के केंद्र को छोड़कर चली गई थीं । जैन परंपरा में दीक्षा स्वीकार करने के बाद यदि उसकी चुनौतियों को स्वीकार करने में कोई अपने आप को अक्षम पाता है तो उसे गृहस्थ में लौटने की स्वतंत्र है । अतः यह स्पष्ट नहीं हो रहा था कि वे अचानक ही कैसे गायब हो गई थी । केंद्र के प्रभारी के रूप में मेरा चिंतित होना स्वाभाविक था क्योंकि उनका कोई सुराग नहीं मिल रहा था । हमने उनके परिवार वालों को सूचित कर दिया था और उनको भी कोई सुराग नहीं थी ।

मेरे मन में विचार कौंधा कि क्यों नहीं जब अनामिका रात्रि को ध्यान का प्रयोग कर रही हो तो उस वक्त इसके बारे में कुछ जानकारी प्राप्त की जाए । अतः उसके ध्यान की अवस्था में, जब मेरी समझ के अनुसार वह दैवी शक्ति से साक्षात्कार कर रही थी, तो मैंने उन समणी जी के बारे में अनामिका से प्रश्न किया । उत्तर मिला कि वे जहां कहीं भी हैं सुरक्षित हैं और थोड़े ही समय बाद उनके बारे में उपयुक्त जानकारी मिल जाएगी । इसके अतिरिक्त कुछ नहीं बताया गया यद्यपि हमने जानने का प्रयास जरूर किया था ।

यहां यह स्पष्ट कर दूं कि इस प्रकार के अन्य भी कई प्रसंग उपस्थित हुए और अनामिका से जो भी प्रश्न किए जाते अथवा जिनका भी वह उत्तर देती बाद में उसे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं होती थी । वह तो जैसे केवल एक चैनल अथवा माध्यम के रूप में काम कर रही थी । बहुत बार तो फुसफुसाहट भरा उसका उत्तर बड़ा ही अस्पष्ट भी होता था और समझने में कठिनाई होती थी अथवा बहुत बार उत्तर गूढ होता था जिसका अर्थ लगाना लगभग संभव नहीं था ।

खैर, हमने अपना प्रयास जारी रखा परंतु कोई भी सूचना नहीं मिली । दो दिन बाद उन समणी जी के स्वस्थ और एक सुरक्षित स्थान पर होने की सूचना मिली और यह भी कि वे अब पुन: सन्यास में लौटने को प्रस्तुत नहीं थी । उनके परिवार का भी संभवतः उनसे संपर्क हो गया था और वे उनके साथ ही थे ।

ऐसी घटनाओं का क्रम और भी है परंतु वर्तमान में तो हमारी कठिनाई अनामिका के द्वारा उपद्रवी शक्तियों द्वारा दिए जाने वाले कष्ट को लेकर थी और समाधान मिल नहीं रहा था । परंतु यदि साधना का क्रम जारी रखना था तो समाधान तो खोजना ही था ।

कुछ तो है – भाग -7
सहयोग स्वजनों का

अनामिका की इस अवस्था में मेरे सामने एक सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि वह जैन परंपरा से संबंध नहीं रखती थी और केवल एक प्रशिक्षक साधिका के रूप में केंद्र में रह रही थी । योग- ध्यान सीखना और सिखाना ही उसका कार्य था । अतः इस तरह के सघन प्रयोग में जाकर जहां कि अनपेक्षित अनजानी चुनौतियों से उसका सामना हो रहा था और जिसके परिणाम भी स्पष्ट नहीं थे, उसमें आगे जाने में उसे सहयोग दूं, प्रेरित करूं अथवा उसे लौट चलने के लिए बोलूं ।

कहना न होगा कि केंद्र से जुड़े अन्य पदाधिकारियों ने, जिनको भी इस प्रयोग के बारे में ज्ञान हुआ, बड़े स्पष्ट शब्दों में मुझसे यह कह दिया था कि मुझे अनामिका का यह प्रयोग बंद करवा देना चाहिए और उसे घर जाने के लिए भी बोल देना चाहिए । उसके साथ होने वाली कोई भी दुर्घटना केवल केंद्र को ही नहीं, जैन धर्म की इस तेरापंथ परंपरा को भी संकट में डाल सकती थी और पूरे समाज को विश्वास में लिए बगैर इस तरह का प्रयोग करना उचित नहीं था । उनकी बात तर्कपूर्ण भी थी और व्यावहारिक भी ।

परंतु मेरा लोभ मुझे ऐसे करने नहीं दे रहा था । मेरा मानना था कि अध्यात्म साधना केंद्र साधना की भूमि है और यहां साधना से संबंधित प्रयोग किए जाने चाहिएं और इससे संबंधित अगर कुछ चुनौतियां हो तो भी वे हमें स्वीकार करनी चाहिएं । परंतु कठिनाई यह थी कि उन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए हम न तो प्रशिक्षित थे और न ही इससे संबंधित हमें अपेक्षित ज्ञान था ।

तभी अचानक मेरे मन में यह विचार आया कि क्यों नहीं मैं कुछ अन्य व्यक्तियों को भी इस में जोड़ूं और जो कुछ घट रहा है उसका साक्षात्कार करवाऊं । कहीं ऐसा तो नहीं है कि जो कुछ मैं देख रहा था वह केवल मेरे मन का वहम था, जैसी कि अवधारणा बाकी कुछ लोगों की भी थी, और मैं अकारण ही इस दलदल में धंसता चला जा रहा था ।

यह सोचकर मैंने अपने छोटे भाई सुशील जैन से इस विषय की चर्चा की जो स्वयं भी ट्रस्टी के नाते पूर्व में अध्यात्म साधना केंद्र से जुड़ा रहा था और जिसे इस प्रकार की दैवी अथवा उपद्रवी शक्तियों के होने और उनके द्वारा इस प्रकार का प्रपंच करने पर बहुत ही कम विश्वास था । या दूसरे शब्दों में कहूं तो उसे लगता था कि इन सब बातों पर मैं सहज ही विश्वास कर लेता था, जो कि उचित नहीं था । अतः मैंने सोचा कि यदि मेरा अनुभव उसका भी अनुभव बने और उससे कुछ चिंतन-मंथन हो सके तो बात-चीत कर कोई रास्ता खोजा जा सकता था ।

भाई सुशील मेरे साथ शाम को केंद्र पर आया और उसने भी वही देखा जो कुछ मैं इतने दिनों से देख रहा था और उसका भी यही स्पष्ट अभिमत बना कि जो कुछ हो रहा था वह कोई नाटक अथवा कपोल कल्पना तो नहीं थी । यद्यपि उसका कोई निश्चित समाधान वह नहीं सुझा पाया ।

संभवतः उसके साथ बात कर जैन परंपरा का प्रसिद्ध कष्टों को हरने वाला स्तोत्र "उपसर्ग हरण" का प्रयोग हमने करना प्रारंभ कर दिया था और उसका प्रयोग करने के बाद ऐसा लगा था कि एक बार के लिए उपद्रवी शक्तियां शांत हो गई थीं । एक बार फिर आशा जगी थी कि संभवतः मार्ग मिल गया है । परंतु यह बहुत देर नहीं टिका ।

कुछ तो है – भाग -8
सहयोग मिलना श्री के. एल. जैन का

जब भाई सुशील जैन के साथ बैठकर यह स्पष्ट हो गया कि जो कुछ हो रहा था वह वास्तविक था और उसका समाधान ढूंढना आवश्यक था, तब संभवत: उसी ने श्री के. एल. जैन साहब का नाम सुझाया । श्री के. एल. जैन अध्यात्म साधना केंद्र के साथ लगभग आधी शताब्दी से जुड़े रहे हैं । न केवल तेरापंथ समाज बल्कि देश के एक प्रतिष्ठित उद्योगपति हैं और उससे अधिक वे एक सरल स्वभावी, विवेकशील और बुद्धिमान व्यक्तित्व के रूप में पहचाने जाते हैं । समाज का हर व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत हो, पारिवारिक हो अथवा सामाजिक, हर समस्या को लेकर उनके पास जाता रहा है और उनको संभवतः उसका समाधान करने में आनंद आता है और वही उनकी पहचान भी है ।

मेरे वे लगभग 25 से अधिक वर्षों से अनन्य मित्र हैं और मेरे मन में भी यह बात आई कि मैंने उनको पहले से ही विश्वास में क्यों नहीं लिया । मैंने अगले ही दिन सुबह उनसे संपर्क किया, वस्तु स्थिति से अवगत करवाया और शाम को ध्यान के समय केंद्र में आने का निवेदन किया, जिसकी उन्होंने सहज स्वीकृति दे दी । शाम को श्री के. एल. जैन साहब आए हुए थे और वे अपना भोजन ग्रहण कर रहे थे । मैंने ही उन से निवेदन किया था कि जब तक वे अपना भोजन संपन्न करेंगे, तब तक अनामिका का प्रयोग प्रारंभ हो चुका होगा और तब हम बीच में जाकर जो कुछ उसके साथ घटने की संभावनाएं हैं उसको देखने, जानने और समझने का प्रयास करेंगे ।
जैन साहब ने संभवतः अपना आधा भोजन भी समाप्त नहीं किया होगा कि ध्यान कक्ष से एक अन्य साधिका, जो कि अनामिका के परिपार्श्व में बैठकर ध्यान में उसके सहयोगी बनने की अपनी भूमिका निभा रही थी, दौड़ती हुई आई और उसने बताया कि अनामिका कष्ट में थी और उसके सहयोगी घबरा रहे थे । उसने हमसे शीघ्र चलने के लिए कहा ।

मैं और के. एल. जैन साहब तुरंत ध्यान कक्ष में पहुंचे और जिसका साक्षात्कार मैं प्रतिदिन कर रहा था, वही के. एल. जैन साहब ने भी देखा । अनामिका का कष्ट उसकी भाव भंगिमा से स्पष्ट दिखाई दे रहा था, उसकी पीड़ा सामने थी और उसके आंसू भी बह रहे थे ।

जैन साहब की वाणी में एक ओज है और उनके गायन में भी एक माधुर्य है । उन्होंने जैनों का उपसर्ग हरने वाला वही प्रसिद्ध स्तोत 'उपसर्ग हरण' का सस्वर उच्चारण करना शुरू कर दिया जिसमें हम सब लोगों ने भी पूरे मनोयोग से सहयोग देना प्रारंभ कर दिया और लगभग 15:20 मिनट बीतते-बीतते ऐसा लगने लगा कि अब अनामिका कष्ट से बाहर आ गई थी, यानी कि अब उपद्रवी शक्तियां चली गई थीं ।

बाद में लोगस्स (तीर्थंकरों की स्तुति) आदि का उच्चारण कर हमने अनामिका का प्रयोग संपन्न कराया और ध्यान से बाहर आकर उसने अपना अनुभव भी बांटा । हमने आचार्य भिक्षु की स्तुति के कुछ गीत गाये जिससे वातावरण सहज और प्रफुल्लित करने वाला हो गया । जैन साहब ने अपने स्वाभाविक तरीके से अनामिका का बहुत उत्साह वर्धन किया और उसे निडर रहकर उपद्रवी शक्तियों को चुनौती देने का आह्वान किया और ऐसा लगने लगा कि अब अनामिका भय रहित हो रही थी और वह इन शक्तियों को चुनौती देने को तत्पर थी । यही क्रम दूसरे दिन भी चला और जैन साहब के सहयोग से एक बार पुनः बात पटरी पर आते दिखाई दे रही थी । परंतु इधर जैन साहब का आना बंद हुआ और उधर उपद्रवी शक्तियों का पुरजोर अपनी शक्ति का प्रदर्शन प्रारंभ ।

कुछ तो है – भाग -9
प्रश्नोतरी अज्ञात की

अनामिका की साधना और कष्ट दोनों बराबर चल रहे थे । इतने कष्ट के बावजूद भी अनामिका अपने संकल्प पर अडिग थी और वह किसी भी कीमत पर अपनी साधना को छोड़ने को तैयार नहीं थी । सुबह 3:00 बजे से 5:00 बजे तक और फिर शाम को लगभग 7:30 बजे से रात को 9:30 बजे तक, यह तो साधना का क्रम बना ही हुआ था । वह दिन में भी थोड़ा जप आदि का प्रयोग कर लेती थी ।

इधर मैं इस चिंतन में लगा था कि उपद्रवी शक्तियों से उसके कष्ट का क्या समाधान ढूंढा जाए । मन में यही चिंता कि कहीं कभी कोई अनहोनी न घट जाए । मैंने इस समय उसकी माताजी को सूचित करना और निमंत्रित करना जरूरी समझा क्योंकि वे साधना केंद्र से बहुत दूरी पर नहीं रहती थीं ।

वास्तव में वे अनामिका के भाई की आईआईटी प्रवेश परीक्षा की तैयारी के चलते हुए अनामिका के पास आकर रहने में असमर्थता का अनुभव कर रही थीं ।

यद्यपि अनामिका का अपनी माता से निरंतर संपर्क बना हुआ था, फिर भी मैंने उन से निवेदन किया कि वे स्वयं आएं, अनामिका से चर्चा करें और उसकी मानसिकता क्या है उसको समझ कर हमें बताएं । मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कभी भी इस तरह की कोई बात न आए कि केंद्र में यह प्रयोग अनामिका को किसी प्रकार के प्रलोभन अथवा भय के द्वारा करवाया जा रहा था और उनको साधना और केंद्र दोनों की तरफ से आश्वस्त भी करना चाहता था ।
मैंने उनसे यह भी आग्रह किया यदि वे आकर अनामिका के साथ केंद्र में रहना चाहें और उसकी देखभाल करना अथवा सहयोग देना चाहें तो केंद्र पूरी व्यवस्था करने को प्रस्तुत था । यद्यपि उन्होंने रहना तो स्वीकार नहीं किया परंतु वे केंद्र में आ जरूर गई थीं । उन्होंने मुझे यही बताया कि अनामिका इस साधना को जारी रखना चाहती थी और किसी भी तरह से पीछे मुड़ कर देखने को प्रस्तुत नहीं थी ।

अनामिका की माताजी की दो ही चिंताएं थीं । एक तो किसी प्रकार से उनके बेटे का आईआईटी में प्रवेश हो जाए और दूसरा अनामिका का विवाह हो जाए । कहीं उनके मन में यह भय भी था की अनामिका साध्वी ही न बन जाए और इसकी उन्होंने मुझसे चर्चा भी की । मैंने उन्हें यही बताया कि कम से कम जैन परंपरा में कोई भी दीक्षा का व्रत तभी स्वीकार कर सकता है जब माता-पिता की अनुमति हो और वर्तमान में तो ऐसा कोई प्रश्न ही सामने नहीं था ।

सांय काल जब अनामिका की साधना प्रारंभ हुई तो प्रतिदिन होने वाला उपद्रव कुछ देर के लिए सामने आया और फिर अनामिका स्थिर हो गई । ऐसा लगने लगा कि उसे दिव्य आत्मा का साक्षात्कार हो रहा था । अनामिका की माताजी को आश्वस्त करने के लिए और अपनी उत्कंठा को शांत करने के लिए भी मैंने यही उचित समझा कि क्यों नहीं साधना की इस अवस्था में अनामिका से प्रश्न कर अज्ञात के रहस्य से पर्दा उठाने का प्रयास किया जाए ।

मैंने अनामिका से कुछ प्रश्न पूछे । मेरा पहला प्रश्न था कि क्या अनामिका का भाई आईआईटी में प्रवेश पा जाएगा । जहां तक मुझे स्मरण है संभवतः प्रश्न अनामिका की माताजी ने भी पूछे थे परंतु उत्तर अनामिका के पास कान लगाकर मुझे ही सुनने और समझने का प्रयास करना पड़ा था, क्योंकि आवाज फुसफुसाहट भरी होती थी और कई बार अस्पष्ट भी ।
अनामिका से यही उत्तर मिला कि यदि वह प्रयास करेगा तो उसे सफलता मिल सकती है (यहां मैं स्पष्ट कर दूं कि सन 2021 में उसका दिल्ली के एक प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश हो गया था) ।

अनामिका की माताजी ने अगला प्रश्न अनामिका के विवाह के संबंध में ही किया था और यह उत्तर मिला था कि वह विवाह करेगी और अपनी पसंद से । एक तरफ जहां अनामिका की माता जी इस उत्तर से आश्वस्त हुई थी वहीं अपनी पसंद के लड़के की बात सुनकर थोड़ी सी असहज भी । उसके लगभग एक साल के भीतर ही अनामिका का विवाह अपनी ही पसंद के एक लड़के से हो गया था और कन्यादान भी हमने ही सपत्नीक किया था ।

एक प्रश्न यह था कि अनामिका भविष्य में क्या करेगी तो उत्तर था कि वह दूसरों के जन कल्याण का कार्य करेगी और उसमें बाधाएं भी आएंगी । यह पूछने पर कि वह जन कल्याण का कार्य क्या होगा बात कुछ बहुत स्पष्ट नहीं हो पाई थी । संभवतः कुछ और प्रश्न रहे हों परंतु वे अब स्मृति में नहीं हैं । इस प्रकार साधना का, उसके बीच आने वाले उपद्रवों का, दिव्य आत्मा से वार्तालाप का, चिंताओं का और आश्वासनों का क्रम जारी था । अभी संभवतः और बहुत कुछ आना और होना बाकी था ।

कुछ तो है – भाग -10

कुछ शंकायें, कुछ समाधान

अनामिका की साधना, उपद्रव और उसके समाधान, बस यही निरंतर चल रहा था । अध्यात्म साधना केंद्र में साधकों का और चारित्रात्माओं का आवागमन बना रहता है और इसी क्रम में वहां समणी मल्लिप्रज्ञा जी का आना हुआ । समणी जी ध्यान में पर्याप्त रूचि रखती हैं और केंद्र के साधकों को प्रशिक्षण भी प्रदान करती रही थीं । उनके आने से हमें अपनी समस्या के समाधान की कुछ आशा जगी ।

सांयकाल ध्यान के समय अनामिका को फिर वही उपद्रव हुआ और समणी जी ने मंगल पाठ, नवकार आदि के उच्चारण से उसको शांत करने का प्रयास किया । थोड़ी देर बाद ऐसा लगने लगा जैसे अनामिका दिव्य आत्मा का साक्षात्कार कर रही थी । मैंने समणी जी को अनामिका द्वारा दिव्यात्मा से पूर्व में प्रश्नोतरी की चर्चा भी कर दी थी । अब मैंने और समणी जी ने कुछ प्रश्न कर अपनी शंकाओं का समाधान पाना उचित समझा ।

कुछ प्रश्न और उनका समाधान स्मृति में है ।
प्रश्न 1: भगवान महावीर विवाहित थे अथवा अविवाहित ?
उत्तर: अविवाहित (कुछ जैन परंपराओं में यह मान्यता है की भगवान विवाहित थे और उनके एक पुत्री भी थी)।

प्रश्न 2: भगवान मल्लिनाथ (16वें तीर्थंकर)स्त्री थे अथवा पुरुष । (कुछ जैन परम्परायें उनको स्त्री मानती हैं ।)
उत्तर: पुरुष

प्रश्न 3: फिर कहीं-कहीं उनके स्त्री रूप की अवधारणा क्यों है ?
उत्तर: गूंढ़ था और समझ नहीं आ सका ।

प्रश्न 4: ध्यान की सर्वोत्तम विधि कौन सी है ?
उत्तर: प्रेक्षा ध्यान

प्रश्न 5: उसका विकास कैसे होगा ?
उत्तर: आचार्य महाश्रमण जी कर रहे हैं ।

प्रश्न 6: शुक्ल ध्यान (जैन परम्परा में ध्यान की उत्कृष्ट अवस्था जो वर्तमान काल में संभव नहीं है) की अवस्था कैसे प्राप्त की जाये ?
उत्तर: इस कालखंड में संभव नहीं है

प्रश्न 7: क्या चौदह पूर्व का ज्ञान (जैन परम्परानुसार ज्ञान की अति उत्कृष्ट अवस्था जो वर्तमान में संभव नहीं है) प्राप्त किया जा सकता है ?
उत्तर : इस कालखंड में संभव नहीं है ।

प्रश्न 8: आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ वर्तमान में किस अवस्था में हैं ?
उत्तर: नहीं मिला ।

यह प्रश्नोत्तरी संभवतः दो या तीन बार में हुई थी ।
यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि अनामिका चूंकि जैन परंपरा से अपरिचित है, अतः इसे परंपरा से संबंधित इन शब्दों का अथवा प्रश्नों का कोई पूर्व ज्ञान नहीं था और न ही ध्यान संपन्न होने के बाद उसे इन प्रश्नों की कोई स्मृति थी ।वह तो केवल एक माध्यम का कार्य कर रही थी, एक टेलीफोन की तरह ।

अनामिका की यात्रा ने अभी और भी बहुत कुछ अनुभव करवाना बाकी था ।

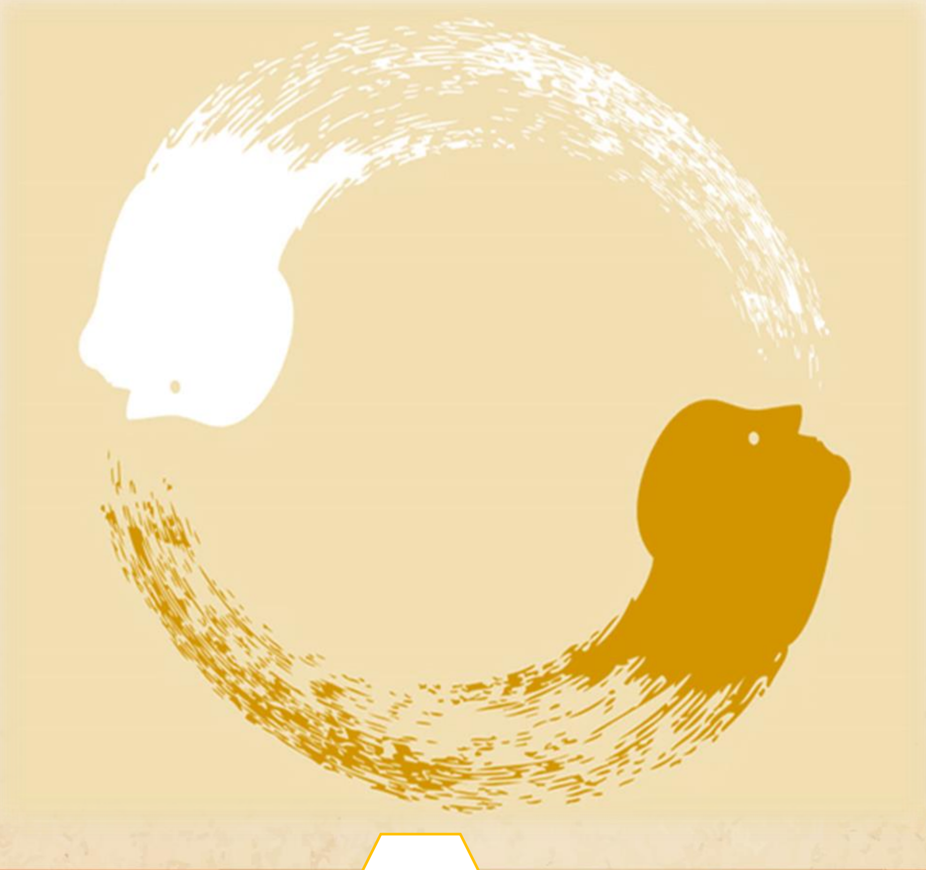

कुछ तो है – भाग -11
दर्शन गुरुदेव के

अनामिका को हो रहे लगातार उपद्रवों ने मन में एक चिता पैदा कर दी थी । अन्य समाज की एक साधिका और समस्या ऐसी जिसके समाधान का कोई निश्चित रूप नहीं था । किसी भी अनहोनी का दायित्व जैसे मैं अपने सर ओढे चला जा रहा था ।

तभी चितन उभरा कि मुझे अनामिका को पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के दर्शन हेतु बैंगलोर ले जाना चाहिए जहां कि वे चातुर्मासिक प्रवास कर रहे थे । अंततः वही तो पूरे धर्म संघ के अनुशास्ता हैं और इन परिस्थितियों में यह अनिवार्य हो जाता था की उनकी निश्रा में चलने वाले कार्यक्रमों में यदि कोई चुनौती आ रही थी तो वे कम से कम उस से परिचित अवश्य हों, और उस संबंध में कोई दिशानिर्देश भी चाहें तो प्रदान कर सकें । साथ ही उनका आशीर्वाद हमारा आगे का मार्ग प्रशस्त कर सकता था ।

यात्रा को भी इस प्रकार से निर्धारित करना था कि अनामिका की सुबह और शाम की साधना का समय बाधित न हो और साथ ही उसे रास्ते में भी किसी प्रकार का कष्ट ना हो ।

केंद्र की एक और साधिका को साथ लेकर हमने बेंगलुरु की यात्रा की । पूज्य गुरुदेव के दर्शन किए, उन्हें पूरे घटनाक्रम की जानकारी दी और उनसे मंगल पाठ सुना । पूरी बात सुनने के बाद और मंगल पाठ प्रदान करने के बाद जब मैंने गुरुदेव के समक्ष यह चितन रखा कि मेरे लिए अब आगे करणीय क्या है तो उनका बहुत ही सहज उत्तर था कि जब भी कोई समाधान सामने ना आए तो चित शांत कर ईष्ट का ध्यान करो और फिर जैसा भी अंतर्मन कहे उसी रास्ते को चुन लो । मैंने इसे ही मंत्र मानकर स्वीकार कर लिया । अनामिका और अन्य साधिका तो गुरुदेव के दर्शन मात्र से और उनसे मंगल पाठ सुनकर ही आत्म विभोर हो गईं थीं ।

उसके बाद मैंने दोनों साधिकाओं के साथ साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी के दर्शन किए और पूरी बात विस्तार से बताई । उन्होंने अनामिका को सामने बिठा कर कुछ प्रश्न पूछे और विषय की गहराई में जाने का प्रयास किया । तब उन्होंने साध्वी शुभ्र यशा जी को संकेत किया कि संध्या काल के ध्यान के समय वे स्वयं उपस्थित रहकर अनामिका का मार्गदर्शन करें ।

सूर्यास्त के बाद चूंकि साध्वियों के प्रवास स्थल पर पुरुषों का जाना निषिद्ध है, अतः मैं अंदर तो नहीं जा पाया परंतु जब अनामिका ध्यान संपन्न कर बाहर आई तो बहुत प्रसन्न थी, क्योंकि बहुत दिनों के बाद उसका ध्यान निर्विघ्न संपन्न हुआ था । उसने बताया कि साध्वी जी ने कुछ विशिष्ट प्रयोग करवाया था और इस कारण से उसे किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ । (लगभग 2 साल बाद जब साध्वी जी से भीलवाड़ा में मेरा पुन: संपर्क हुआ तो उन्होंने बताया कि अनामिका को उसकी सुषुम्ना पर अर्हम का विशेष प्रयोग करवाया गया था । मेरी गलती यह रही कि मैं साध्वी जी से उसी समय प्रयोग का स्वरूप नहीं पूछ पाया और दूसरे दिन सुबह जल्दी ही बेंगलुरु से उदयपुर के लिए रवाना हो गया, यह सोच कर कि संभवतः अब समस्या का समाधान हो गया था । बाद में दिन में अनामिका और उसकी साथी साधिका भी दिल्ली लौट आए ।

मुझे क्या मालूम था कि उदयपुर में जब अनामिका की संध्या काल की साधना का समाचार मिलेगा तो मेरी चिंता और बढ़ने वाली थी ।

कुछ तो है – भाग -12
जब चाहेंगे नहीं तो पाएंगे कैसे

बेंगलुरु से लौटने के बाद अनामिका की साधना और उपद्रव एक साथ पूर्ववत् ही चल रहे थे । इधर पर्युषण पर्व का समय आ गया था जो कि जैन परंपरा में साधना के विशिष्ट 8 दिन होते हैं और जैन साधु-साध्विओं के सान्निध्य में इस धर्म के अनुयायी एक स्थान पर एकत्रित होकर सामूहिक त्याग, तपस्या, साधना करते हैं ।

इन्हीं दिनों में श्री धनराज जी बैद, जो कि स्वयं एक विशिष्ट साधना कर रहे हैं, अध्यात्म साधना केंद्र परिसर में आकर रह रहे थे और अपनी साधना कर रहे थे । वे भी अनामिका की साधना और उपद्रवों के साक्षी बने और अपनी तरह से उन्होंने अनामिका को अभय रहने की और अपने संकल्प पर अडिग रहने की प्रेरणा दी । अपने विशिष्ट रूप में उन्होंने उसकी हिम्मत बंधाई । एक समय में तो रात्रि में जब अनामिका को उपद्रव होने लगा तो अन्य साथी लोग उन्हें उनके कमरे से बुला लाए थे और फिर उन्होंने अनामिका को मंगल पाठ सुनाया और उपद्रव के शांत होने में सहयोग प्रदान किया।

संवत्सरी के दिन सभी जैन धर्म के अनुयायी पूर्ण उपवास रखते हैं और एक तरह से संन्यास चर्या का पालन करते हैं । अतः उस दिन मैंने अनामिका को बता दिया था कि मैं उसकी रात्रि कालीन साधना में सम्मिलित नहीं हो पाऊंगा और अन्य साधकों को भी यह निर्देश दिया था कि वे अनामिका का सहयोग प्रदान करने में सावधानी बरतें ।

इसे संयोग कहिए या और कुछ, उस दिन अनामिका के मन में न जाने क्या आया कि रात्रि कालीन ध्यान के समय जब वह दिव्य आत्मा का साक्षात्कार कर रही थी तो उसने प्रार्थना की कि उसके सभी साथी, जो एक तरह से उसका मजाक उड़ाते थे, यदि उनको भी दिव्य आत्मा का साक्षात्कार हो सके तो उनका कल्याण भी होगा और वह मजाक का पात्र भी नहीं बनेगी ।

दिव्य आत्मा ने अनामिका को उस दिन यह संकेत दिया कि उस दिन के ध्यान के समय जो भी अन्य साधक अनामिका के साथ उपस्थित होगा उसे दिव्य आत्मा का साक्षात्कार हो सकेगा। परंतु ऐसा हो नहीं सका क्योंकि कोई भी अन्य साधक अनामिका की साधना के समय उपस्थित ही नहीं था । संभवत: मेरी अनुपस्थिति के बारे में आश्वस्त होकर उन्होंने उस दिन अनामिका का सहयोग देना अपेक्षित नहीं समझा और वे ध्यान कक्ष के बाहर ही बैठे रह गए ।
बाद में जब उन्हें अनामिका की दिव्य आत्मा से हुई वार्तालाप का पता चला तो हो सकता है कि उन्हें पछतावा भी हुआ हो । परंतु अनामिका को तो अभी और बहुत कुछ देखना सहना बाकी था ।

कुछ तो है – भाग -13
क्या उस दिवंगत आत्मा से संपर्क हुआ था

साध्वी श्री कुलबाला जी कई दिनों से कैंसर से पीड़ित थीं और स्वास्थ्य में कुछ विशेष सुधार नहीं हो पा रहा था। मैंने अग्रगण्य साध्वी श्री रतन श्री जी से विशेष निवेदन किया कि यदि वे अध्यात्म साधना केंद्र में पधारें और ध्यान के विशेष प्रयोग किए जाएं तो कुछ लाभ हो सकता है। उन्होंने मेरी प्रार्थना को स्वीकार किया और अगस्त-सितंबर 2019 में सभी साध्वियों के साथ केंद्र में पधारे ।

केंद्र की अनामिका ने साध्वी कुलबालाजी को प्रयोग करवाने प्रारंभ किए । यह तो नहीं कहा जा सकता कि वे पहले से स्वस्थ हो गईं परंतु उनका स्वास्थ्य स्थिर हो गया था और अब उसमें कोई गिरावट नहीं दिखाई दे रही थी । इधर पर्युषण काल भी पूरा हो गया और साध्वी वृंद का यह चितन बना कि अब चातुर्मास स्थल को छोड़कर और समाचारी से हटकर अधिक समय केंद्र में रहना अपेक्षित नहीं है । यद्यपि मेरा तो आग्रह था कि यदि वे दीर्घकाल तक केंद्र में समय लगातीं तो स्वास्थ्य में अपेक्षित परिवर्तन भी आ सकता था, परंतु साध्वी वृंद के लिए उनकी चर्या अधिक महत्वपूर्ण थी और वे ग्रीन पार्क पधार गए ।

मुश्किल से लगभग 2 सप्ताह ही गुजरे होंगे कि साध्वी कुलबालाजी का स्वास्थ्य एकदम तेजी से गिरता चला गया और वे देवलोक पधार गईं । अनामिका की साध्वी श्री में काफी श्रद्धा हो गई थी, क्योंकि वह मनोयोग से करवाती थी और साध्वी श्री बहुत ही मनोयोग से प्रयोग करतीं थी ।

साध्वी श्री के देवलोक होने की सूचना जब मिली तब वह अपने घर गई हुई थी । उसकी मम्मी का मेरे पास फोन आया, यह बताते हुए कि अनामिका साध्वी श्री के देवलोक होने की सूचना से बहुत व्यथित थी और उसका रोना बंद नहीं हो रहा था और उसने मुझसे उसे सांत्वना देने के लिए कहा ।

मैंने अनामिका को समझाने का प्रयास किया परंतु वह शांत ही नहीं हो रही थी । अचानक मेरे मन में न जाने क्या आया कि मैंने उससे कहा कि तुम दिवंगत साध्वी जी से ध्यान में जाकर संपर्क करने का प्रयास करो तो शायद तुम्हारे मन को शांति मिले । मैंने यह पढ़ रखा था कि दिवंगत आत्माओं से अथवा अपने प्रिय जनों से ध्यान की गहराई में जाकर यदि संपर्क करने का प्रयास किया जाए तो अन्य लोक में भी उनसे संपर्क किया जा सकता है ।

मैंने कुछ देर बाद जब अनामिका से संपर्क किया तो उसने बताया कि वह साध्वी श्री से संपर्क नहीं साध पा रही थी । उसे शांत करने के लिए मैंने उसे पुन: प्रेरणा दी और ध्यान की गहराई में जाकर फिर प्रयास करने का सुझाव दिया ।

कुछ देर बाद अनामिका का फोन आया और उसने कहा की उसका साध्वी श्री जी से संपर्क हो गया था । यद्यपि वे दिखाई तो नहीं दी परंतु उनसे वार्तालाप हो गया था । साध्वी श्री ने अनामिका को शोक न करने और शांत रहने को कहा । उन्होंने कहा कि वे प्रसन्न अवस्था में हैं और यदि अनामिका शोक मनाती है तो उन्हें कष्ट होता है । उन्होंने जीवन-मरण के सत्य से और आयुष्य पूर्ण होने पर यात्रा संपन्न करने के तथ्य से भी अनामिका को परिचित करवाया और न कष्ट पाने और न कष्ट देने का संदेश दिया ।

इसके बाद वह अनामिका शांत हो गई । उसने साध्वी श्री से यह भी निवेदन किया था कि क्या जब वह चाहेगी तो साध्वी श्री से उसका संपर्क हो पाएगा जिसका उन्होंने कोई आश्वासन नहीं दिया ।

मेरा तो ऐसा कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं है परंतु जिस किसी का भी यह अनुभव है मैं उसे ठुकराना भी नहीं चाहता । शेष जैसी जिसकी मान्यता अथवा धारणा ।

कुछ तो है – भाग -14

क्या मौत सामने खड़ी थी ?

अनामिका की साधना के साथ साथ उसकी तपस्या भी चल रही थी और उसी अनुपात में उपद्रवों का जोर भी । अनामिका ने भोजन संयम तो पहले ही प्रारंभ कर दिया था, अब तो वह उपवास भी रख रही थी और कभी-कभी दो या तीन उपवास एक साथ । इस चीज का प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा था । दूसरी ओर जैसे इसी अनुपात में उपद्रवों का जोर भी बढ़ रहा था ।

उपद्रवी शक्तियां उसे बार-बार दिखाई देतीं, उसे भयभीत करने की कोशिश करतीं और उसे शारीरिक पीड़ा भी देती, जिससे उसका शरीर टूटने लग जाता । वे उसे बार-बार अपनी साधना बंद कर देने का आदेश दे रही थीं और न करने पर परिणाम भुगतने की चेतावनी भी । यहां तक कि वे उसे यह भी बता रहीं थी कि ऐसा न करने पर उसकी मौत निश्चित थी ।

दूसरी ओर दैवी शक्तियां बार-बार आकर अनामिका का साहस बढ़ाती और उसे अपने संकल्प पर दृढ़ रहने का सुझाव देतीं । कभी-कभी अनामिका को उपद्रवी शक्तियां और दैवी शक्तियां एक साथ दिखाई देतीं ।

उपद्रवी शक्तियां, ऐसा लगता, जैसे काले वेश में हों और उसके चारों ओर एकत्रित होकर उसे भयभीत कर रही हों । वहीं दैवी शक्तियां सफेद वस्त्रों में नवकार मंत्र का जप करती हुई और हिम्मत बंधाती हुई नजर आती । यद्यपि पहचानने में कुछ भी नहीं आ रहा था ।

अब साधना को लगभग 47 अथवा 48 दिन हो गए थे और अनामिका को दिव्य आत्मा से भी यह संकेत मिला था कि अगले दो-तीन दिन बहुत चुनौतीपूर्ण हो सकते थे और इन्हें पार करना बहुत जरूरी था अन्यथा कुछ भी घटित हो सकता था । एक तरह से अनामिका को मौत सामने दिखाई दे रही थी ।

इसी समय अपने ध्यान से बाहर आने और संयत होने के बाद देर रात्रि को अनामिका ने मुझसे फोन पर कहा कि वह अपने संकल्प को छोड़ने वाली नहीं थी, परंतु उसे चिंता केवल एक बात की थी कि उसके जाने के बाद उसके भाई की पढ़ाई कहीं रुक ना जाए । अतः वह मुझसे इस बात का आश्वासन चाहती थी कि यदि उसे कुछ हो जाए तो उसके भाई की पढ़ाई निर्बाध जारी रह सकेगी ।

मैंने उसकी हिम्मत बढाते हुए और निर्भय रहने का उपदेश देते हुए उसे यह विश्वास दिलाया कि उसके भाई की पढ़ाई किसी भी दशा में अविराम चलती रहेगी । इससे उसका साहस और बढा और उसने कहा कि अब वह पूरी हिम्मत के साथ इस उपद्रव का सामना करेगी और अपने संकल्प को डिगने नहीं देगी । परंतु अनामिका की इस स्थिति ने मुझे बहुत गहरी चिता में डाल दिया था और किसी अनहोनी का भय अब मुझे भी सताने लगा था, जिसे मैं सार्वजनिक भी नहीं कर सकता था । इसका कुछ न कुछ निश्चित उपाय करना अब अनिवार्य हो गया था ।

कुछ तो है – भाग -15
अंतिम प्रहार

उपद्रवी शक्तियों द्वारा दिया जा रहा कष्ट और धमकियां तथा दैवी शक्तियों का संकेत अब मेरे सामने निश्चित समाधान ढूंढने के अतिरिक्त कुछ उपाय न था । अतः मैंने पूरे तेरापंथ धर्म संघ में संभवतः सबसे अधिक ध्यान साधना के लिए सुपरिचित मुनि जय कुमार जी से पुनः संपर्क करने का निश्चय किया और उन्हें पूरी वस्तुस्थिति से अवगत कराया ।

उन्होंने कहा कि एक उपाय है इन शक्तियों का सामना करने का, जिसे एक तरह से इमरजेंसी में ट्रेन में जंजीर खींचने से तुलना की जा सकती है । उनके अनुसार पहले हमने नवकार मंत्र का पदानुक्रम में विपरीत दिशा में माला फेरने का प्रयास किया था और उससे कुछ समय के लिए उपद्रवी शक्तियों को भय भी लगा था परंतु क्योंकि अब वह काम नहीं कर रहा था तो एक और अन्य उपाय पर कार्य करना होगा ।

जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं कि मुनि श्री जयकुमार जी के परामर्श अनुसार अनामिका नवकार मंत्र के पांच पद - *णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं* - इन्हें इस क्रम से उच्चारित करने के स्थान पर सबसे अंतिम पद को सबसे पहले और इसी क्रम में सबसे पहले पद को सबसे अंत में उच्चारित कर रही थी ।

मुनि जयकुमार जी का सुझाव था कि अब केवल क्रम ही विपरीत न रखें अपितु उसे अक्षरशः ही विपरीत कर लेना चाहिए । यानी इसका उच्चारण अब निम्न प्रकार से होना चाहिए :
णंहूसावव्स एलो मोण
णंयाझाज्वउ मोण
णंयारियआ मोण
णंधाद्धसि मोण
णंताहंरिअ मोण

मैंने न केवल अनामिका को परंतु अध्यात्म साधना केंद्र में उपस्थित सभी साधकों से निवेदन किया कि वे भी अनामिका के साथ साधना के समय उपस्थित रहें और इस मंत्र का जप मुनि श्री जय कुमार जी के परामर्श अनुसार विपरीत रूप से करें । अब तो जैसे सभी साधक अनामिका के कष्ट को अपना मानने लगे थे और वे सभी इसमें अपना पूरा सहयोग करने को तत्पर थे । और उन्होंने उसी संध्या काल से अनामिका के साथ बैठकर इस विधि के अनुसार नवकार मंत्र का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया ।

इस जप का प्रभाव भी तुरंत दिखाई देने लगा और अब उपद्रवी शक्तियों ने अनामिका को चुनौती देते हुए कहा था कि इस मंत्र के जप से उन्हें कष्ट हो रहा था परंतु वे इससे घबराने वाली नहीं थी । उस दिन तो वे जा रही थीं परंतु वे पुनः आयेंगी और अनामिका की साधना को भंग करने हेतु उसे विवश करेंगी । उनकी चेतावनी यानी कि मौत की धमकी पूर्ववत् थी और उन्होंने यह भी कह दिया था कि अनामिका अपने साधना के 50 दिन पूरे नहीं कर पायेगी ।

अब यह स्पष्ट था कि एक और उपद्रवी शक्तियां इस जप के प्रभाव से भयभीत हो रही थीं और वापस जा रही थीं तो दूसरी ओर वे अपनी धमकी को पूर्ववत् बनाए हुए थी ।

मुनि जय कुमार जी ने, मुनि धर्मेश कुमार जी ने, समणी वृंद ने और अन्य साधकों ने हमें बार-बार यही कहा था कि उपद्रवी शक्तियां भयभीत कर हमें कष्ट तो पहुंचा सकती थीं, परंतु वे प्राण ही ले लें ऐसा संभव नहीं था । अतः पूरा संघर्ष भयभीत होने और अभय रहने के बीच था कि इनमें से कौन विजयी होता है ।

इन परिस्थितियों में आगामी दिन के लिए हमें और योजना बनानी और उपाय करना अपेक्षित था ।

कुछ तो है – भाग -16

लड़ाई आर-पार की

अनामिका की साधना के 49वें दिन अध्यात्म साधना केंद्र के केवल साधकों ही नहीं अपितु अन्य साथियों ने भी यह संकल्प स्वीकार किया कि वे सब उपवास रखेंगे और अनामिका के साथ बैठकर विपरीत क्रम से अक्षरशः नवकार मंत्र का जप करेंगे । इसमें सभी ने बारी-बारी से अपना समय निश्चित कर लिया था और अखंड जप में जुट गए थे ।

मैंने भी निश्चय किया कि इस काल में मैं स्वयं भी अध्यात्म साधना केंद्र में जाकर रहूंगा और सब का सहयोग देने और मनोबल बढ़ाने का प्रयास करूंगा । अनामिका की माताजी भी उसके साथ केंद्र में ही आकर रह रहीं थी ।

सभी ने बारी-बारी से क्रम बना कर पूरे काल तक अनामिका के साथ रहने का और अखंड जप करने का निश्चय किया । इस प्रकार लगभग 24 घंटे कम से कम 2 साधक लगातार अनामिका के साथ बने रहे और जप करते रहे, फिर चाहे वह ध्यान कर रही थी अथवा अपने कमरे में थी ।

इस दिन संध्याकाल में जब इस प्रकार से उपवास और अखंड जप का कार्यक्रम चल रहा था तो उपद्रवी शक्तियां आयी तो सही परंतु उन्होंने यह स्वीकार किया कि वे इस जप के कारण होने वाले कष्ट को नहीं सह पा रही थी । साथ ही इसके कारण अनामिका के चारों ओर एक ऐसा कवच बन गया था जिसे वे भेद भी नहीं पा रही थी । उन्होंने यह भी कहा कि अब वे वापस जा रही थीं और उनका पुनः आकर अनामिका को कष्ट देने का कोई भाव नहीं था ।

दूसरी ओर दैवी शक्तियों और दिव्यात्मा ने भी अनामिका को यह संकेत दिया कि अनामिका का कष्ट अब टल गया था और वह आगे की साधना उपद्रव रहित पूरा कर सकती थी ।

अनामिका की समस्या का इस तरह समाधान होते देखकर हम सभी को अत्यंत संतोष का अनुभव हुआ और सभी के चेहरे पर एक प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, मानो हमने कोई बहुत बड़ा अंतरराष्ट्रीय मैच जीत लिया हो ।

मैं अब आगामी साधना काल में अनामिका से और बहुत कुछ जानने और समझने की व्यग्रता से प्रतीक्षा करने लगा था ।

कुछ तो है – भाग -17
यात्रा अनंत की

अनामिका अब अपने उपद्रवों से बाहर आ चुकी थी और आनंद पूर्वक अपनी साधना कर रही थी । पहले तो जब अनामिका साधना करती थी और साक्षात्कार या उपद्रव के मिश्रित दौर से गुजरती थी तो मेरे मन में दिव्य आत्मा से साक्षात्कार के समय कभी-कभी प्रश्न कर शंका समाधान करने की बात रहती थी, परंतु अब चूंकि व्यवस्थित और निर्विघ्न साधना चल रही थी, अतः मैंने भी अपनी उत्कंठा पर अंकुश लगा दिया था और केवल साक्षी भाव से उसकी साधना को देख रहा था ।

जैन परंपरा की आस्था के अनुसार हमारी पृथ्वी की तरह ही एक लोक और है जिसे महाविदेह क्षेत्र कहा जाता है और वहां भी इस मृत्युलोक की तरह ही मनुष्यों का आवास है । परंतु महाविदेह क्षेत्र की अपनी बहुत विशेषताएं हैं-जैसे कि वहां का वातावरण अत्यंत ही सम एवं सुखमय है । वहां के लोग अत्यंत साधना शील और शांत है और इससे भी आगे बढ़कर वहां हर समय तीर्थंकरों का वास रहता है और उनके उपदेश एवं सानिध्य प्राप्त होता रहता है, जबकि इस धरती पर भगवान महावीर अंतिम तीर्थंकर के बाद अब एक बहुत लंबे कालखंड के लिए तीर्थंकर का होना संभव नहीं है ।

इसी प्रकार जबकि इस धरती पर पुनः तीर्थंकर के आगमन तक मुक्ति प्राप्त करना संभव नहीं है, महाविदेह क्षेत्र में अब भी मुक्ति प्राप्त हो सकती है । अतः यदि शुभ कर्मों का योग हो तो आगामी जीवन में महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्राप्त कर मुक्ति की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है । जैन परंपरा में वर्तमान जीवन में भी कुछ कुछ साधकों द्वारा महाविदेह क्षेत्र की यात्रा का वर्णन मिलता है ।

अनामिका निश्चित रूप से इस मान्यता से परिचित नहीं थी और मैंने उस से चर्चा करते हुए कहा कि यदि वह चाहे तो इस दिशा में एक प्रयास कर सकती है । इसी के अंतर्गत उसने एक दिन अपने ध्यान साधना के समय दिव्य आत्मा से यह निवेदन किया था कि क्या वे उसे महाविदेह क्षेत्र की यात्रा करवा सकते हैं और उन्होंने अवसर आने पर इसमें सहयोग देने का आश्वासन दिया था । मैंने अनामिका को दिव्य आत्मा के इस आश्वासन का स्मरण करवाया और कहा कि वह इस दिशा में पुन: प्रयास करे ।

अनामिका ने दिव्य आत्मा से इस हेतु निवेदन किया और एक दिन संध्याकाल में साधना करते हुए अनामिका को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह किसी अन्य लोक में ही पहुंच गई थी । वहां उसने साधारण वस्त्रों में बहुत ही शांत प्रकृति के लोग देखे । दिगंबर अवस्था में एक अत्यंत तेजोमय दिव्य आत्मा को भ्रमण करते हुए देखा और यह भी कि वे किसी प्राकृतिक उच्च आसन पर बैठकर प्रवचन कर रहे थे, और उनके चारों ओर अनेक मनुष्य, जानवर आदि बैठकर प्रवचन श्रवण कर रहे थे । जैन मान्यता के अनुसार जब तीर्थंकर देशना करते हैं अथवा प्रवचन देते हैं तो उनके अतिशय के कारण मनुष्य पशु आदि सभी योनि के लोग एक साथ बैठकर उसे सुनते हैं और अपनी अपनी क्षमता के अनुसार समझ सकते हैं ।

वहां अनामिका ने अन्य अनेक देवी शक्तियों, आचार्य भिक्षु, आचार्य महाप्रज्ञ आदि का साक्षात्कार भी किया । अनामिका के अनुसार पूरा दृश्य इतना मनोरम, इतना सुहावना था कि किसी भी प्रकार वह उसे शब्दों में व्यक्त करने की स्थिति में नहीं थी ।

अनामिका द्वारा समय-समय पर दैवी शक्तियों के साथ अनंत में अथवा महा विदेह क्षेत्र में साक्षात्कार का क्रम चलता रहा जिसकी चर्चा अपनी रुचि अनुसार वह समय-समय पर अपनी साधना के संपन्न होने पर कर देती थी । इधर मैं इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि अनामिका का 100 दिन का साधना का क्रम पूरा हो जाए तो मैं दिव्य आत्मा से अपनी शंकाओं के समाधान का प्रयास करूं । तब तक मैं अनामिका की साधना में किसी प्रकार का व्यतिक्रम उपस्थित नहीं करना चाहता था ।

अनामिका की साधना के सौवें दिन उसे फिर दिव्य आत्मा का साक्षात्कार हुआ । आज उसने अनामिका को यह संदेश दिया कि अब उसकी साधना पूरी हो रही थी और उसे दिव्य आत्मा के साक्षात्कार की अपेक्षा नहीं थी, अतः अब आगे से उसे साक्षात्कार नहीं हो पाएगा । इस प्रकार अपना मौन आशीर्वाद देकर वे अदृश्य हो गईं ।

मेरी शंका समाधान की प्रतीक्षा अब कब समाप्त होगी यह कोई नहीं जानता ।

भाग-17 में लिखे गये उपरोक्त वर्णन से बहुत से पाठक असहमत हो सकते हैं और इसे कपोल-कल्पना मान सकते हैं । मेरा उन्हें इसे सत्य मानने का अथवा स्वीकार करने का कोई आग्रह नहीं है, और उनकी मान्यता को भी मैं पूरे सम्मान के साथ स्वीकार करता हूं, और इस पूरे वृत्तांत को यही विराम देता हूं ।

सम्पन्न

लेखक परिचय

श्री के.सी. जैन का जन्म 26 जनवरी, 1959 को श्री गंगानगर, राजस्थान में हुआ था, जहां से उन्होंने कॉमर्स में स्नातक तक शिक्षा ग्रहण की । दिल्ली विश्वविद्यालय से विधि स्नातक होने के साथ ही सन 1980 में उनका भारतीय राजस्व सेवा मैं चयन हुआ जहां से वे सन् 2017 में प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त के पद से सेवानिवृत्त हुए ।

योग और ध्यान उनके प्रारंभ से ही रुचि के विषय रहे हैं । अध्यात्म साधना केंद्र, दिल्ली जैन परंपरा की प्रेक्षा ध्यान पद्धति का एक प्रमुख केंद्र है, जिसके साथ वे गत 30 वर्षों से जुड़े रहे हैं और उसके निदेशक भी हैं ।

इसके अतिरिक्त वे अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, तेरापंथ कल्याण परिषद, JITO(जीतो), शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य संस्थाओं आदि से भी जुड़े रहे हैं ।

- के. सी. जैन